Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

शिवानी जी के उपन्यासों में वर्णित समस्याएँ

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

शिवानी जी के उपन्यासों में वर्णित समस्याएँ

Seema Narwal

Assistant Professor in Hindi, Gaur College of Education, Hisar

----------X----------

साहित्य समाज का दर्पण है, उसमें उपन्यास, साहित्य की वह विधा है, जिसमें सारा समाज दर्पण के सामने पड़ने वाली परछाई के समान दृष्टिगोचर होता है। समाज के यथार्थ रूप का चित्रण उपन्यास में पाया जाता है। प्रेमचन्दोत्तर काल में ऐसे उपन्यासकारों की एक लंबी परम्परा है, जो सामाजिक जीवन के यथार्थ को लक्ष्य बनाकर चलें हैं। ऐसे उपन्यासकारों की श्रेणी में अनेक महिलाएँ हैं, जिनमें शिवानी जी प्रमुख हैं। शिवानी जी का सृजन–संसार व्यक्ति, परिवार, समाज, जाति, धर्म, कला, संस्कृति, अर्थ, राजनीति आदि अनेक बिन्दुओं पर दृष्टि डालता चला है। उनके उपन्यासों में दहेज अनमेल–विवाह वैधव्य, पर्दाप्रथा, जाति–पाँति, अंधविश्वास एवं विभिन्न नारी–समस्याएँ प्रमुख हैं, यद्यपि शिवानी के उपन्यासों की मुख्य समस्या नारी–समस्या है। साथ ही साथ राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्याएँ भी अछूती नहीं रही हैं। मैं इन विविध समस्याओं का अवलोकन करूँगीं।

सामाजिक समस्या :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति का समाज से अटूट संबंध होता है। समाज से कटकर व्यक्ति नहीं रह पाता। इसी सामाजिक जीवन के प्रवाह में बहते हुए व्यक्ति को अनेक सामाजिक समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं इन सामाजिक समस्याओं में विभिन्न समस्याओं जैसे दाम्पत्य जीवन, रखैलप्रथा, वैश्याजीवन, अवैधमातृत्व, वैवाहिक समस्याओं, प्रेम समस्या आदि विभिन्न समस्याओं को शिवानी जी ने अपने उपन्यासों का वर्ण्य–विषय बनाया है जो दृष्टव्य हैं।

वैवाहिक समस्या :

हमारे समाज में विवाह को संस्कार माना गया है। विवाह परिवार की आधारशिला है। विवाह के माध्यम से ही व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं घर बसाते हैं, अपनी यौन–इच्दाओं की पूर्ति, संतानोत्पत्ति एवं बच्चों का पालन–पोषण करते हैं। विवाह दो शरीरों का ही नहीं दो आत्माओं का मिलन है।

वर्तमान समाज में विवाह के दो प्रकार प्रचलित हैं – परम्परागत विवाह व्यवस्था और प्रेमविवाह। परम्परागत विवाह–व्यवस्था में विवाह के नियामक माता–पिता ही होते हैं। दूसरे प्रेमविवाह में लड़के–लड़कियों की स्वतंत्र इच्छा ही वैवाहिक चुनाव में सर्वोपरि मानी जाती है। दूसरी व्यवस्था पाश्चात्य संस्कृति की ऊपज है।

आज विवाह–व्यवस्था में परिवर्तन हो गया है। विवाह को दो आत्माओं का मिलन, जन्मजन्मांतर का संबंध स्त्री–पुरूष का स्थायी बंधन आदि परम्परागत धारणाएँ क्षीण हो चुकी है। आज विवाह एक समझौता अथवा मैत्री संबंध के रूप में स्वीकार किया जाता है। महानगरीय जीवन में विवाह संबंधी उन सभी परम्पराओं को पूरा करने का न तो किसी को अवकाश है, और न ही आवश्यकता समझी जाती है। प्रेमविवाह, सिविलमैरेज आदि के प्रचलन से विवाह संस्कार विधि भी अति सरल हो गई है। आधुनिक अर्थव्यवस्था, औद्योगिक क्रान्ति, नारी की नई चेतना अर्थात् नारी स्वातंत्रय और बढ़ती हुई नारी–शिक्षा आदि का विवाह संस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसके फलस्वरूप दहेजप्रथा, बालविवाह, अनमेलविवाह, प्रेमविवाह, अंतर्जातीय–विवाह, विवाह–विच्छेद आदि वैवाहिक समस्याएँ खड़ी हुई हैं। हम यहाँ शिवानी जी के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न वैवाहिक समस्याओं का अध्ययन करेंगें।

प्रेम–समस्या :

कबीर जी के अनुसार पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ें सा पंडित होय के अनुसार प्रेम–बिना जग सूना है, प्रेम–बिना संसार नीरस है। ईश्वर ने स्त्री–पुरूष की रचना ही प्रेम के लिए की है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनुष्य की सबसे बड़ी भूख रोटी नहीं, काम है। 'कैंजा' उपन्यास में सुरेश कहता है – ''नारी और जल' की तृषा जब कभी घातक रूप से तीव्र हो उठती है तो उसे बुझाने के लिए मनुष्य जधन्य से जधन्य अपराध भी कर सकता है। जब प्यास बहुत गहरी हो उठती हैं, तब मनुष्य अंधा बन गन्दी नाली के अंजलिभर पानी से प्यास बुझाने में भी नहीं हिचकता।''

परन्तु कभी–कभी यही प्रेम समस्या का कारण बन जाता है। कहा गया है ''वही प्रेम सच्चा एवं श्रेष्ठ है जो व्यक्ति में होने वाले गुणों को प्रेरणा देकर उन्हें विकसित करने का प्रयत्न करता है। जो प्रेम इस तरह का कार्य करने में असफल बनता है वह प्रेम निष्फल है।'' और इसी से प्रेम–समस्या खड़ी होती है।

धार्मिक समस्या :

धर्म क्या हैं – स्वामी विवेकानन्द ने कहा था ''मानवता को पतन के गर्त से बचाने के लिए हमें हर स्थिति में धर्म का अवलम्बन ग्रहण करना पड़ेगा। धर्म मनुष्य के भीतर निहित दोषत्व का विकास है। यह जीवन का परम स्वाभाविक तत्व है।''

यह धर्म–मानव–जीवन एवं समाज का एक अभिन्न अंग है। धर्म का आश्रय लेने से मनुष्य को अपनी असफलताओं, अतृप्त आकांक्षाओं और निराशाओं के प्रति संतोष व्यक्त करने एवं उसके समझौता करने का सहारा मिलता है। इससे व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। इस तरह उच्च एवं अमर आदर्शों की स्थापना के द्वारा व्यक्ति अपने नश्वर जीवन की निस्सारता में सारता की रचना करके, संतोष एवं शांति का अनुभव करता है तथा धर्म नैतिक पतन एवं स्वेच्छाचारिता से समाज की रक्षा

www.ignited.in

करता है। परन्तु आज भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित होती जा रही है। भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के मिश्रण के कारण आज धर्म संबंधी अनेक समस्याएँ खड़ी हुई हैं। इन समस्याओं का उल्लेख शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में किया है।

राजनीतिक समस्या :

हमारे दैनिक जीवन में राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि विज्ञान, साहित्य, धर्म, उद्योग आदि क्षेत्रों तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वसनीय संबंधों में राजनीति की पैठ हो गई है। और हर रूपों में राजनीति पाई जाती है। जैसे शिक्षा में राजनीति, कला में राजनीति, साहित्य में, धर्म में, प्रशासन में राजनीति। इस वजह से अनेक राजनैतिक समस्याएँ खड़ी होती है। शिवानी जी ने भी अपने उपन्यासों में कई राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है।

आर्थिक समस्या :

अर्थ कई समस्याओं का कारणभूत तत्व है। इसके तले मनुष्य, परिवार, समाज ही नहीं धर्म और राजनीति भी दबे है। शिवानी जी को अर्थ के कारण उभरते परिवर्तन, जन्म लेती समस्याएँ इतनी प्रभावित करती हैं कि उन्होंने दहेज, अनमेल–विवाह, पंडों की ठगी आदि कितने ही विषयों का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। शिवानी जी के पात्र अधिकतर अभिजात वर्गीय होते हैं। फिर भी धन के आधिक्य या अभाव ने समाज को प्रभावित किया है – 'मायापुरी' के तिवारी का प्रचुर वैभव–सम्पत तले दबे भोले–भोले जनार्दन जी का परिवार, उनके धनने अपनी आधुनिका, स्वछन्दमना, अनाकर्षक पुत्री सविता के लिए सतीश जैसा सुयोग्य वर जुटा दिया था। लेखिका कहती हैं – ''अपने वैभव से सबसे वाँछनीय नर–रत्न का हृदय जो उसके चरणों में डाल दिया है।''

आर्थिक विपन्नता समाज को अव्यवस्थित कर देती है गरीबी के कारण 'चौदहफेरे' उपन्यास की मल्लिका अपनी बसी बसाई गृहस्थी उजाड़ देती है। मात्र पैसे के लिए उसका नैतिक पतन हो जाता है। इस आर्थिक विपन्नता के कारण कई सामाजिक समस्याओं का जन्म होता ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कहानी – स्वरूप और सिद्धांत, राजेन्द्र यादव नेशनल पब्लिशिंग, हाउस, नई दिल्ली

2. काव्य के रूप, बाबू गुलाबराय आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली

3. कुछ विचार, प्रेमचंद सरस्वती प्रेम, बनारस

4. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी,

5. साहित्य का इतिहास, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

6. परामनोविज्ञान कीर्तिस्वरूप, रावत, नेशनल पब्लिशिंग, हाउस, दिल्ली

7. प्रतीकवाद, डॉ. पद्मा अग्रवाल मनोविज्ञान, प्रकाशन, वाराणसी

8. प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष, डॉ. कृष्णदेव झारी, नालन्दा प्रकाशन, दिल्ली

9. फ्रायड–मनोविश्लेषण, अनु. देवेन्द्र कुमार वेदालंकार

10. भारत का सांस्कृतिक इतिहास, हरिदत्त वेदालंकार, आत्माराम एण्ड, सन्स, दिल्ली

11. भारत की सामाजिक संस्थाएँ सरला दुबे प्रकाश बुक डिपो, बरेली

12. भारतीय नारी – अस्मिता और अधिकार आशारानी वोरा, नेशनल प्रकाशन, दिल्ली